RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 39 अंक 28 हल्द्वानी सम्वत् 2080 सोमवार 18 दिसम्बर 2023 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

मोदी के जादू से उत्तराखण्ड में खिलखिला रहे हैं पार्टी नेता

अपनी धाक दिखाने को स्थानीय स्तर पर खूब बौछार

पिघलता हिमालय प्रतिनिधि

देहरादून में हुए वैश्विक निवेशक सम्मेलन की सफलता और राज्यों के चुनाव परिणाम में जीत के बाद से प्रदेश के सीएम पुष्कर धामी और उनकी टीम मुग्ध है। प्रधानमंत्री के सम्मेलन में पधारने से यह बात और पुष्ट हो गई कि श्री धामी मोदी के बहुत करीब हैं। पीएम ने आत्मविश्वास के साथ कहा कि आने वाले चुनाव में भी सफल रहेंगे और विश्व के समक्ष भारत अग्रणीय होगा। सीएम ने कहा उत्तराखण्ड में कन्वेंशन सेन्टर बनेगा। यहाँ निवेशक सुरक्षित हाथों में हैं। सम्मेलन में प्रणव अदानी, सज्जन जिन्दल, संजीव पुरी, बाबा रामदेव, कल्याण चक्रवर्ती, आर. दिनेश जैसे जाने-माने दिग्गज पधारे। केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने समझौता ज्ञापन में उपस्थित रहते हुए आयोजन को मजबूती दी।

प्रदेश में इस बड़े आयोजन के अलावा तीन राज्यों में मोदी के जादू से उत्तराखण्ड में भी पार्टी नेता खिलखिला रहे हैं। मोदी भक्तों के अलावा पार्टी के कार्यकर्ता राजस्थान,

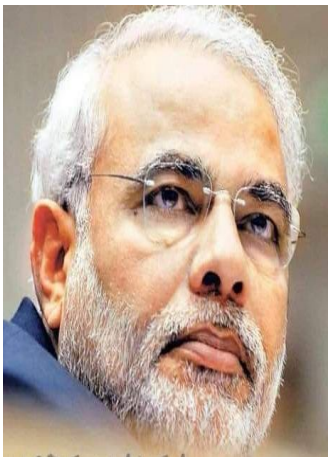

मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ के चुनाव परिणामों पर खूब चर्चा कर रहे हैं लेकिन अपने अनुरूप तर्क देने वालों में पार्टी के छोटे-बड़े नेता अग्रणीय बने हुए हैं। आने वाले लोकसभा चुनाव के लिये प्रदेश में मात्र 5 सीटें हैं लेकिन मोदी की लोकप्रियता के भरोसे अधिकांश नेता दिखाई दे रहे हैं। ऐसे में भाजपा के टिकट से चुनाव लड़ने वालों की सूची लम्बी है। यही कारण है कि निकाय चुनावों के लिये तैयारी में लगे स्थानीय नेता भी अपनी रणनीति बना रहे हैं।

राष्ट्रीय स्तर पर राहुल गांधी की दौड़ और विपक्षी एकता का पाठ पढ़ाते हुए यह दावा किया जा रहा था कि भाजपा को पटखनी मिलेगी लेकिन मोदी-शाह का मैनेजमेंट देशभर में भाजपा के स्वर्णयुग को बनाए हुआ है। हालांकि पूरे देश की राजनीति में साफ दिखाई देने लगा है कि भाजपा उत्तर और विपक्ष दक्षिण में हाबी है। उत्तर भारत में भाजपा ने बूथ स्तर तक मजबूती बनाई हुई है। लोकसभा चुनाव की रेलपेल में उत्तराखण्ड पूरे देश को सन्देश देने का प्रमुख स्थान तो बन ही चुका है। बड़े नेताओं के बराबर आगमन से देश-दुनिया का ध्यान इस ओर है। ऐसे में यहाँ की पाँचों लोकसभा सीटें महत्वपूर्ण हैं।

भोटिया पड़ाव बनखोला की भूमि जोहार सामाजिक एवं सास्कृतिक समिति को हस्तांतरित करने का प्रस्ताव

जिला पंचायत अध्यक्ष ने भी सीएम को पत्र भेजा

पिघलता हिमालय प्रतिनिधि

बागेश्वर स्थित भोटिया पड़ाव पर नज़रें लग चुकी हैं लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि क्या इसमें ठोस कार्य पर लगे उद्यमियों को अवसर मिल पायेगा। वर्तमान में बनखोला स्थित पड़ाव में कुछ उद्यमियों द्वारा घरेलू एवं कुटीर उद्योग के उत्पादों को लगाया गया है और उन्हें उत्तरायणी मेले पर बिक्री का भरोसा होता है। इस समय बनखोला में जोहार सामाजिक एवं सांस्कृतिक समिति का कार्यालय भी है और इसकी अध्यक्ष श्रीमती पूजा जंगपांगी की चाह है कि पड़ाव को उसकी जगह मिले। पूजा जी कहती हैं कि इतिहास में इस बात के प्रमाण हैं कि सीमान्त के व्यापारियों के लिये बागेश्वर प्रमुख पड़ाव था लेकिन समय के साथ इसे विसरा दिया गया और यहाँ के मुख्य प्रतीक तक हटा दिये गये हैं जबकि ऐतिहासिक व व्यापारिक

उत्तरायणी मेले के साथ ही परम्परागत व्यापारी वर्ग यहाँ से जुड़ा रहा है। आन्दोलनकारी गंगा सिंह पांगती भोटिया पड़ाव की भूमि के लिये वर्षों से लड़ाई लड़ रहे हैं और इसके लिये वह लगातार पत्राचार कर रहे हैं। इस बीच पड़ाव में जम-जमाव कर रहे व्यापारी व स्थान न मिलने से भटके हुए व्यापारियों का मानना है कि पड़ाव के वह बड़े भागीदार हैं, किसी भी प्रकार से उन्हें सम्मान दिया जाए ताकि सदियों की जो

ठोस कार्य में जुटे उद्यमियों को पहले अवसर मिले

परम्परा रही है उसे उसी रूप में स्थापित किया जा सके।

जिला पंचायत अध्यक्ष बसन्ती देवी ने सीएम पुष्कर सिंह धामी को पत्र भेजते हुए भोटिया पड़ाव बनखोला की भूमि को जोहार सामाजिक एवं सांस्कृतिक समिति बागेश्वर को हस्तान्तरित करने का निवेदन किया है। उन्होंने समिति की अध्यक्ष पूजा जंगपांगी का हवाला देते हुए कहा है कि पूर्व में भी जन प्रतिनिधियों ने इस भूमि को समिति को हस्तान्तरित करने की सहमति प्रदान की थी।

अब जबकि भोटिया पड़ाव बागेश्वर का मसला एकदम चर्चा में है, बड़ा सवाल यही है कि क्या यह भूमि समिति को आसानी से हस्तान्तरित हो जायेगी। और यदि यह प्रक्रिया चलती है तो उन उद्यमियों को इसमें कितना अवसर मिलेगा जो सीमान्त क्षेत्र की परम्परा को विपरीत स्थितियों में भी निभा रहे हैं।

बेरीनाग की जीआई चाय के बगान बचाओ

डॉ.हरीश चन्द्र अन्डोला

जब भारत में अंग्रेजों का शासन था तब उत्तराखण्ड के बेरीनाग की चाय देश-विदेशों में प्रसिद्ध थी और आजादी के बाद राज्य के सभी चाय के बाग खत्म हे गए। 1996 में जब ये उत्तरप्रदेश का हिस्सा था, उस समय की सरकार ने यहाँ फिर से चाय के उत्पादन को शुरू करने का निर्णय लिया, अलग राज्य बनने के बाद यहाँ की सरकारों ने कौसानी, बेरीनाग, चमोली और चंपावत के साथ-साथ कुछ जगहों पर टी-गार्डन को प्रोत्साहन दिया। इसका नतीजा ये हुआ कि आज कौसानी, बेरीनाग, चंपावत और चमोली में खूबसूरत टी-गार्डन मौजूद हैं, जो अच्छा उत्पादन कर रहे हैं, इन जगहों की आर्गेनिक टी की तो सीधे विदेशों में मांग है। बेरीनाग की चाय किसी दौर में इंग्लैंड के चाय शौकीनों की पसंदीदा चाय थी। इस कारण उसकी अत्यधिक मांग बनी रहती थी। उस दौर में बेरीनाग चाय लन्दन के चाय घरों में एक अत्यधिक मांग वाली चाय थी। यह चाय नब्बे के दशक तक लन्दन टी हाउस में अत्यधिक मांग वाली चाय थी। अफसोस की बात है कि आज पुरानी पीढ़ी को छोड़कर इस ब्रांड को भुला दिया गया है। चाय दुनिया में सर्वाधिक लोकप्रिय पेय में से एक है और दुनिया के लगभग हर कोने में आसानी से उपलब्ध है। उत्तराखण्ड में चाय की खेती का इतिहास 150 वर्ष पुराना है।

उत्तराखण्ड में चाय की खेती यूरोपियनों के आने के बाद ही शुरू हुई। सन 1824 में ब्रिटिश लेखक बिशप हेबर ने कुमाऊँ क्षेत्र में चाय की सम्भावना व्यक्त करते हुए कहा था कि यहाँ की जमीन पर चाय के पौधे प्राकृतिक रूप में उगते हैं लेकिन काम में नहीं लाए जाते हैं। हेबर ने कहा था कि कुमाऊँ की मिट्टी का तापमान तथा अन्य मौसमी दशाएं चीन के चाय बागानों से काफी मेल रखती हैं। वानस्पतिक उद्यान सहारनपुर के अधीक्षक डा. रोयले उत्तराखण्ड में चाय की सफल खेती से पूर्णत: सहमत थे। चूँकि ब्रिटिश शासन के दौरान अंग्रेजों को कुमाऊँ में निजी सम्पत्ति रखने की अनुमति नहीं थी इसलिए कुछ ब्रिटिश लोगों द्वारा उन्हें उत्तराखण्ड में निजी सम्पत्ति देने की मांग उठाई गई। सन 1827 में डा. रोयाले ने सरकार से अनुरोध किया कि कुमाऊँ की विशाल भूमि जहाँ कोई खेती नहीं हो रही है चाय बागानों के लिए यूरोपीय लोगों को दी जानी चाहिए। तत्पश्चात सन 1834 में भारत में एक चाय समिति का गठन किया गया और सन 1837 में ब्रिटिश संसद ने अंग्रेजों को भारत में निजी सम्पत्ति रखने की अनुमति देने वाला एक विधेयक पारित कर दिया। कुमाऊँ और गढ़वाल के आयुक्त लार्ड बैटन ने आदेश जारी किया कि कुमाऊँ और गढ़वाल की उपयुक्त जलवायु परिस्थितियों के साथ पहाड़ी की चोटी अंग्रेजों को मुफ्त में दी जा सकती है। यह उन्हें वहाँ रहने और चाय की बागवानी करने की सहूलियत देगा क्योंकि वहाँ कुछ चाय के पौधे प्राकृतिक रूप से उगते हैं। सन 1850 के दशक के दौरान बेरीनाग में एक चाय बागान स्थापित किया गया था। तब बेरीनाग चाय कम्पनी के प्रबन्धक ने चीनी ईंट चाय के निर्माण का रहस्य खोजा और उनकी चाय को चीनी किस्म से कहीं बेहतर माना गया। बेरीनाग चाय पूरी तरह से आक्सीडाइज्ड नहीं होती है। यह चाय अपने अद्वितीय स्वाद, सुगन्ध और रंग के लिए मशहूर है जोकि असम के बागानों को कड़ी चुनौती देती है. इसका वुडी स्वाद अन्य चाय के समान नही होता है यही कारण है कि इस चाय को चाय का शैम्पेन भी माना जाता है। ब्रिटिश दौर में उत्तराखण्ड के सभी उद्यानों में बेरीनाग और चौकोरी उद्यान के चाय की गुणवत्ता और स्वाद सर्वाधिक लोकप्रिय थी। चौकोड़ी और बेरीनाग उद्यानों को बाद में ठाकुर दान सिंह बिष्ट ने खरीद लिया था. उनकी चाय

शेष पृष्ठ 2 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

सड़क पहुँच का विकास और बढ़ती दुर्घटनाएं

समय से साथ आगे बढ़ना जरूरी है। उत्तराखण्ड के दूरस्थ तक सड़कों का जाल बिछने लगा है। सड़क पहुँच का विकास आसानी से समझ आता है कि इससे दूरस्थ क्षेत्र के लोगों और वीरान होते इलाकों में सुगमता होगी परन्तु ध्यान रहे इनकी बनावट ऐसी हो कि भविष्य का ध्यान रहे क्योंकि सड़क दुर्घटनाओं की सूचनाएं लगातार आ रही हैं। मुख्य सड़कों में ही बराबर हादसे हो रहे हैं, फिर जैसे-तैसे पहुँच के लिये बना दिये गये मार्गों में वाहन चलाना बहुत कठिन है।

मुख्यमंत्री पुष्कर धामी की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट की बैठक में 'मुख्यमंत्री ग्राम सम्पर्क योजना' प्रारम्भ करने को हरी झण्डी मिल चुकी है और कहा गया है कि दो लाख की ग्रामणी आबादी तक सड़क पहुँचेगी। गड्डामुक्त सड़कों के लिये भी बार-बार चेताया जा रहा है। सुविधा के लिये हर रास्ते होने ही चाहिये लेकिन दुर्घटनाओं से कैसे बचाव हो इस बारे में जागरुकता भी जरूरी है। वैसे भी वाहनों की संख्या बेहिसाब होने से प्रमुख पर्वतीय मार्ग जाम से त्रस्त हैं। सारे हालातों को देखते हुए सरकार और हर किसी को सड़क सुविधा के लाभ से ज्यादा बचाव के लिये तैयार होना चाहिये। सड़क बनने की चाल और बनी सड़क पर वाहन चाल नियंत्रित हो।

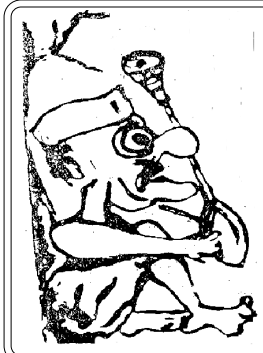

फसक

दाज्यू, ढोल तो बजने ही वाला ठैरा

ब्या-काज का सीजन है, सब निभाने होते हैं बल

दाज्यू, हमारा ननकू रोज देर रात तक नाच रहा है। कह रहा है- 'मोदी चल रहा है।' दाज्यू, ननकू तो बच्चा ही हुआ, क्या कहें। ननकू के बूबू बच्चीदा तक नाच रहे हैं। क्याप्प होने लगा है कहा....। खुशियां तो पहले भी होती थीं लेकिन अब मय लुगाईयों के सड़क पर भूंभाट डांस होने लगे हैं। मौका चाहिये, ढोल तो बजने ही वाला ठैरा। देहरादून से हरिद्वार आने तक सात बार गाड़ी रुकवा कर ननकू ने डांस कर दिया। हम सोच रहे हैं कि अब गाँव जाकर क्या करेगा?

एमबीपीजी कालेज हल्द्वानी के सभागार में भाजपा अनुसूचित जाति जनप्रतिनिधि सम्मेलन में खूब बड़े नेता पधारे। कालेज में परीक्षा के दौरान ढोल बजने से छात्र नाराज हो गये। प्राचार्य कह रहे हैं- 'एक हाल सम्मेलन को दिया गया था। ढोल नगाड़े बजाने की मनाही की गई थी' दाज्यू, छात्र और साहब लोग कहते रहें अब क्या होगा? जो होना था हुआ। दुकान बहुत तेजी से चल रही है, लट्ठ-मुंगर सब धुंआधार हैं.....

पिथौरागढ़ में दुष्कर्म दोषी एनसीसी प्रशिक्षक को 25 वर्ष का कठोर कारावास की सजा हो गई। प्रशिक्षक ने नाबालिक कैडेट के साथ कई बार दुष्कर्म किया था बल। पता नहीं क्या होने जा रहा है कलजुग में। दाज्यू, सरकार भी सख्त हो गई है बल। सड़कें गड्ढामुक्त नहीं होने पर 7 इंजीनियरों का वेतन रोक दिया गया। बागेश्वर के डीएम ने प्रतिकूल प्रविष्टि भी दी है।

दाज्यू, ब्या-काज का सीजन है, सब निभाने ठैरे। लिफाफे देने और लेने हुए। बर-ब्योली को आशीर्वाद के साथ मटर-पनीर का रिवाज हुआ। गाँव भी शहर का ढोल बजा रहे हैं।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

मुनस्यारी महोत्सव में हस्तशिल्प

मुनस्यारी। तीन दिवसीय मुनस्यारी महोत्सव में हस्तशिल्प प्रदर्शनी आकर्षण का केन्द्र रही। आकर्षक झांकियों के साथ महोत्सव का शुभारम्भ उपजिलाधिकारी यशवीर सिंह ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि मुनस्यारी को पर्यटन नगरी का दर्जा प्राप्त है। इस तरह के महोत्सव पर्यटन को बढ़ाने में मददगार साबित होंगे। इस अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय बाक्सर काजल फर्सवाण, राज भट्ट, ललिता बृजवाल, नरेन्द्र सिंह रावत, गोकर्ण सिंह जंगपांगी, माही सयाना, विक्रम दरियाल उपस्थित थे। महोत्सव समिति के अध्यक्ष राजू पांगती ने अतिथियों का बैच अलंकरण कर स्वागत किया।कार्यक्रम सम्पन्न कराने में केदार मर्तोलिया, रवि बृजवाल, कुलदीप रावत, भीम राम, मुन्ना सयाना, लक्ष्मण पांगती शामिल थे।

पूर्व मंत्री गंगावासी की स्मृतियां

पौड़ी। प्रदेश के पूर्व कैबिनेट मंत्री डॉ. मोहन सिंह 'गांववासी' का देहादून के एक अस्पताल में 8 दिसम्बर 2023 को निधन हो गया। मूल रूप से पौड़ी के बछेली गाँव निवासी गांववासी संघ के प्रचारक व भाजपा के संस्थापक सदस्यों में से थे। 1996 में पौड़ी सीट से उत्तर प्रदेश विधानसभा पहुँचे थे।

नैनी झील में पाल नौका प्रतियोगिता

नैनीताल। अप्रैल माह में नैनी झील में पाल नौका प्रतियोगिता होगी। कोविड काल से लेकर बन्द हुए इस आयोजन को 5 साल बाद पुन: आरम्भ किया जा रहा है। नैनी झील विश्व की सबसे ऊँचाई वाली सैलिंग रिगाटा (पाल नौका) खेल की झील है। अंग्रेजों ने वर्ष 1880 में इंग्लैंड से दो पाल नौकाएं लाकर दौड़ाई 1897 में नैनी याट क्लब की नींव रखी गई थी।

जोशीमठ में ड्रिलिंग, सैंपल जाँच को

गोपेश्वर। बदरीनाथ यात्रा के प्रमुख पड़ाव जोशीमठ के भूधंसाव प्रभावित सुनील वार्ड में जियो टेक्निकल सर्वे के तहत 80 मीटर डीप कोर ड्रिलिंग पूरी कर ली गई है। ड्रिलिंग में निकले पत्थर-मिट्टी के नमूने जाँच के लिये मुम्बई की लैब में भेजे गए हैं। जाँच रिपोर्ट आने के बाद ही वास्तविक स्थिति स्पष्ट हो पाएगी। प्रारम्भिक जाँच में जमीन के नीचे चट्टान के बजाय बड़े बोल्डर होने का अनुमान है। भूधंसाव प्रभावित क्षेत्रों में लोक निर्माण विभाग नीदरलैंड की कम्पनी फुगरो से अलग-अलग 6 स्थानों पर जियो टेक्निकल ड्रिलिंग सर्वे करा रहा है। प्रथम चरण में कम्पनी की ओर से सुनील वार्ड में औली रोड पर 13 नवम्बर को ड्रिलिंग कार्य शुरु किया गया था, जो पूर्ण हो चुका है। जोशीमठ के सिंहधार वार्ड, आर्मी एरिया, मनोहर बाग वार्ड व मारवाड़ी वार्ड सहित कुल 6 स्थानों पर जियो टेक्निकल ड्रिलिंग सर्वे किया जाना है। सर्वे के बाद कम्पनी लोनिवि को अपनी रिपोर्ट सौंपेगी। तब दीर्घकालीन योजना तैयार की जायेगी।

देश-विदेश की प्रमुख घटना

सड़क दुर्घटना में घायलों का कैशलेस इलाज

सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय देशभर में सड़क दुर्घटना पीड़ितों के लिए कैशलेस चिकित्सा सुविधा लाने की योजना बना रहा है। सचिव अनुराग जैन ने बताया है कि इस योजना के तहत दुर्घटना स्थल के निकटतम उपयुक्त अस्पताल में दुर्घटना पीड़ितों के लिए कैशलेस ट्रामा देखभाल उपचार तक पहुँच प्रदान करने की तैयारी है। इसे तीन माह में लॉन्च कर दिया जायेगा।

नौकरी नाम पर ठगने वाली वेबसाइटें बन्द

घर बैठे नौकरी और घर बैठे कमाई का झांसा देकर आम लोगों को ठग रही सौ वेबसाइटों को बन्द कर दिया गया है। गृह मंत्रालय के तहत आने वाले इंडियन साइबर क्राइम कोआर्डिनेशन सेन्टर ने इन वेबसाइटों की पहचान करते हुए इनके खिलाफ कार्रवाई की सिफारिश की थी।

चक्रवाती तूफान मिचौंग ने मचाई तबाही

चेन्नई और उसके आसपास के जिलों में चक्रवती मिचौंग ने भारी तबाही मचाई। तूफान के दो दिन बाद से स्थानीय लोगों को जलभराव और बिजली कटौती की समस्या से जूझना पड़ रहा है। बाढ़ जैसे हालात में कई सड़कों पर घुटने तक पानी भरा हुआ है।

बेरीनाग की.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

को भोटिया व्यापारियों ने ल्हासा के रास्ते पश्चिमी तिब्बत में निर्यात किया और तिब्बतियों ने महसूस किया कि तिब्बत में चीन से आयातित चाय से बेरीनाग की चाय कहीं बेहतर मानी थी। उस दौर में बेरीनाग की चाय के जायके की प्रसिद्धी दूर-दूर तक फैलने लगी। अपने देश भारत में बेरीनाग की चाय लोकप्रिय हो गई थी इसके अतिरिक्त ब्रिटेन व चीन में भी बेरीनाग की चाय का डंका बजने लग गया था। उत्तराखण्ड में चाय की खेती को बढ़ावा देने के लिए भले ही लाख दावे किए गए हों, लेकिन हकीकत इन दावों से मेल खाती नजर नहीं आ रही है.एक दौर में दुनिया को नम्बर वन क्वालिटी की चाय मुहैया कराने वाले बेरीनाग के चाय बागान नष्ट हो रहे है। चाय बागानों की इस बदहाली ने जहाँ रोजगार को प्रभावित किया है, वहीं एक पहचान को भी इतिहास के पन्नों में समेट दिया है। खण्डर में तब्दील बेरीनाग की ऐतिहासिक चाय फैक्ट्री यहाँ के उजड़ते चाय उद्योग की दास्तां बयां कर रही है। 1864 में बिट्रिश व्यवसायी हिली ने यहाँ चाय बागान और फैक्ट्री की शुरूआत की थी। आजादी के बाद भी यहाँ चाय का उत्पादन होता रहा था, बेरीनाग की चाय इंग्लैंड, स्वीडन सहित कई यूरोपीय मुल्कों की पहली पसन्द रही है। आज भी यहाँ करीब सौ एकड़ की भूमि पर चाय बागान बचे हैं, लेकिन प्रभावशाली लोग आए दिन चाय बागानों को तबाह कर अपनी इमारतें खड़ी कर रहे हैं। इस गोरखधन्धे को रोकने की न तो कभी प्रशासन ने कोशिश की और न ही टी.बोर्ड बागानों की बचाने की सुध ली। चाय बागानों की दुर्दशा देखकर कहा जा सकता है कि उत्तराखण्ड को टी.स्टेट बनाने का दावा झूठा साबित हो रहा है। ऐसे में अगर कोई ठोस कदम नही उठाया गया तो, वो दिन दूर नहीं जब यहाँ के चाय बागानों पर पूरी तरह भू माफियों का कब्जा हो जाएगा। एक दौर में दुनिया को नंबर वन क्वालिटी की चाय मुहैया कराने वाले बेरीनाग के चाय बागान नष्ट हो रहे है। चाय बागानों की इस बदहाली ने जहाँ रोजगार को प्रभावित किया है, वहीं एक पहचान को भी इतिहास के पन्नों में समेट दिया है। खण्डर में तब्दील बेरीनाग की ऐतिहासिक चाय फैक्ट्री यहाँ के उजड़ते चाय उद्योग की दास्तां बयां कर रही है। 1864 में बिट्रिश व्यवसायी हिली ने यहाँ चाय बागान और फैक्ट्री की शुरूआत की थी।

आजादी के बाद भी यहाँ चाय का उत्पादन होता रहा थाए लेकिन भूमि विवाद हुक्मरानों की अपेक्षा के चलते आज ये उद्योग पूरी तरह खत्म हो गया है, यहाँ चाय का कारखाना खुला और यहां की चाय विदेशों में जाने लगी। बाद में मालदार परिवार भी इसका रखरखाव नहीं कर पाया तो धीरे-धीरे यहाँ के चाय बागान उजड़ने लगे अब तो यहाँ सिर्फ अतीत की यादें भर शेष रह गई हैं। उत्तराखण्ड में क्रमश: अदलती-बदलती सरकारों मे शीर्ष नेतृत्व के अभाव, तथा प्रदेश की समृद्धि व जनसरोकारों हेतु स्थापित सरकारों का विजन न होने से, प्रदेश के प्रबुद्ध जनमानस के सम्मुख घोर निराशा ही प्रकट हुई लेकिन भूमि विवाद हुक्मरानों की अपेक्षा के चलते आज ये उद्योग पूरी तरह खत्म हो गया है। बेरीनाग की चाय इंग्लैंड, स्वीडन सहित कई यूरोपीय मुल्कों की पहली पसन्द रही है। आज भी यहाँ करीब सौ एकड़ की भूमि पर चाय बागान बचे हैं, लेकिन प्रभावशाली लोग आए दिन चाय बागानों को तबाह कर अपनी इमारतें खड़ी कर रहे हैं। इस गोरखधन्धे को रोकने की न तो कभी प्रशासन ने कोशिश की और न ही टी-बोर्ड बागानों की बचाने की सुध ली। वहीं उत्तराखण्ड टी बोर्ड के निदेशक का कहना है कि बेरीनाग के चाय बागानों के लिए अभी तक किसी भी कास्तकार का कोई प्रस्ताव नही है. अगर भविष्य में कोई प्रस्ताव आए तो इस पर विचार किया जाएगा। चाय बागानों की दुर्दशा देखकर कहा जा सकता है कि उत्तराखण्ड को टी-स्टेट बनाने का दावा झूठा साबित हो रहा है। ऐसे में अगर कोई ठोस कदम नही उठाया गया तो, वो दिन दूर नहीं जब यहाँ के चाय बागानों पर पूरी तरह भू-माफियों का कब्जा हो जाएगा। उत्तराखण्ड के पिथौरागढ़ जिले के चौकोड़ी व बेरीनाग की चाय का स्वाद कभी सात समुन्दर पार अंग्रेज भी लिया करते थे। अपनी अलग महक और स्वाद के कारण विदेशों में इसकी खासी मांग थी। यहां के चाय की खुश्बू दार्जलिंग की चाय को भी टक्कर देती थी। लेकिन शासन-प्रशासन की उपेक्षा के चलते सारे चाय बागान उजड़ चुके हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

संस्कार

जोहारी शौकाओं के लुप्त होते अन्तिम मृत संस्कार अंश 'पितरढुङ (पाषाणखण्ड)

जगदीश सिंह बृजवाल

जोहारी शौकाओं के धार्मिक मान्यताओं के अनुसार अन्तिम संस्कार (मृतक संस्कार) गतकीरी (ग्यारहवीं, तेरहवीं) पीपल ठसक,(पीपल पानी) पितरढुङ, मौसचखै, के पश्चात अन्त में बर्षी (बार्षिक संस्कार) करने का रिवाज प्रचलन में है। जिसमें मौसचखै बौद्ध धर्म संस्कार तथा कुछ जनजातीय संस्कार भी सम्मिलित किये गये है शौका जाति सर्वेश्वर सोच पर भी विश्वास रखते थे। सभी धर्मों के प्रति आदर भाव बनाए रखते थे। पितरढुङ संस्कार जिस पर प्रकाश डाला जा रहा है। मृतक संस्कार कर्ता पन्द्रहवें दिन में स्नानादि के बाद पितरढुङ स्थापित करने के नदी किनारे पहुँचता है जिस स्थान के पर मृतक का दाह-संस्कार किया गया था उसी के आस-पास से पितरढुङ (पाषाण खण्ड) लिगात्मक आकार का उठाकर घर वापस आकर नियत स्थान पर स्थापित करता है।

मृतक संस्कार कर्ता पन्द्रहवें दिन में स्नानादि के पश्चात जब नदी किनारे पर पहुँचता है तब पितरढुङ चयनित करते वक्त अपनी एक दृष्टि उस पाषाण खण्ड पर डालता है जिसे उठाकर साफ स्वच्छ कपड़े में लपेटकर रक्खी जाती है फिर दूसरा पाषाण खण्ड नहीं उठाया जाता है। पाषाण खण्ड को उठाते ही पीछे मुड़कर भी नहीं देखना पड़ता है यह प्रथा सदियों से समाज में चलन में है इस विषय की जानकारी से स्वयं लेखक भी अनभिज्ञ था। कुमाऊँ, गढ़वाल, जौनसार भाबर में यह प्रथा प्रचलित होने से पितरढुङ, पितृकुड़ी , पितृकुडा, स्मारक, लिगात्मक मृतक स्मृति के प्रतीक के रहस्य का भलीभांति जानकारियां मालुम हो चुका है।

मुनस्यारी जोहार के शौका समुदायी लोग अपने व्यवसाय के चलते वर्ष में मौसम के अनुसार अपने अपने प्रवास बदलते रहते थे। जिस कारण से कठिन संस्कार वर्जनाओं को करने में अपने को असमर्थ भी महसूस करने लगे। कठिन वर्जनाओं को सरल रूप अपनाकर सम्पन्न भी करते रहे, तो कुछ का तो त्याग भी करना भी उचित समझा था। श्राद्ध, तर्पण को बारहवें दिन के अन्दर ही सम्पन्न कर लिया जाता है तथा पितरढुङ को पन्द्रहवें दिन में घर में ही नियत स्थान पर स्थापित कर दिया जाता है। बाइसवें दिन में मौसचखै की प्रथा कराकर सभी विरादरों को अशुभ कार्यो के बन्धन से मुक्त कर दिया जाता है। मृतक के तिथि के बाद वर्षी (वार्षिक संस्कार) 45 दिन में सम्पन्न किया जाता है। जिसमें मृतक के लिए पकवान, नये वस्त्र समर्पित कर चढ़ावा के साथ सभी ग्रामवासियों को भोज में भी आर्मोत्रित करते हैं। कोइ-कोई एक बर्ष बाद भी बर्षी करते हैं। जौनसार भाबर में पितृकुड़ी, पितृकुड़ा का प्रचलन मृतक के स्मृति में घर के आस-पास छोटा सा घर का प्रतीक बनाने का रीवाज है तथा वहीं पर तिथि, बार में चढ़ावा किया जाता है। कुमाऊँ के कुछ क्षेत्र में पितृ स्मृति में नदी-नाला, पहाड़ की चोटी में स्मारक स्थापित करते हैं जहाँ तिथि, बार, में बलि, श्राद्ध, तर्पण करने का प्रावधान भी है। मृतक के लिए पकवान, नये वस्त्र को समर्पित करते हैं।

गढ़वाल में यह प्रथा लिगांत्यक पाषाण खण्ड आते-जाते रास्ते में अवस्थित करते हैं जिसे शिवपूजन के रूप में भी देखते हैं तिथि, तीज-त्यौहार में चढ़ावा भी किया जाता है।

जोहार का पितरढुङ पाषाण खण्ड (लम्बू-लम्बू ढुङ) घर के अन्दर ही स्थापित कर तीज-त्यौहार, तिथि को जो याद करने का रीवाज सदियों से चली आ रही है इस विषय में अवश्य अधिकांश शौका अनभिज्ञ हो सकते हैं। आधुनिक नयी पीढ़ी तो शायद इसके विषय में ए. बी. सी. डी. भी नहीं जानते होंगे। आज यह प्रथा शौका बहुल गाँव तक ही सीमित है, धीरे -धीरे लुप्त भी हो जायेगा।

लोगों के अनुसार, यह भी कहा जाता है कि मृत आत्मा, मृतक की तिथि से एक वर्ष तक घर के अन्दर ही कहीं न कही वास करता/करती है पितरढुङ को उसी के स्मृति में स्थापित किया जाता है ठीक एक वर्ष के पश्चात घर का कोई भी सदस्य उस पितरढुङ को नदी में विसर्जित कर देता है। तब मृत आत्मा अन्य घर के पूर्वजों के साथ ही सम्मिलित हो जाता है, यह मानना है।

आधुनिक समय में शहरों में निवास करने वाले शौकाओं के बीच पितरढुङ का स्थान मृतक के छाया चित्र (फोटो) ने ले लिया हो परन्तु गाँव में आज भी प्रथा जिन्दा ही है। सदियों से चली आ रही रीति-रीवाज जिसे पूर्वजों ने हमें प्रेम से सुपर्द किया था। अवश्य हमें संजोए रखना होगा,जो हमारे संस्कार का अंग भी है, और रहेगा भी. हमें इसे जानने समझने की कोशिश भी करनी ही पड़ेगी। संस्कारों का संचयन लेखक का मुख्य उद्देश्य है। 'जो इतिहास भूल जाता है, इतिहास उसे भूला देता है।'

नानछिना की मावकोट की यात्रा

नानछिना दिनों की हल्की हल्की फाम औंने, जब हम मावकोट म छियां,
हमार मावकोट अल्मोड़ा जिा में रानीखेत-द्वाराहाट जनि बाट में एक गौ नौगाँव में,
हमरि इजा क नौ दुर्गा दवी छी, और आपुण मैं- बाबू कि निकांछी च्येली छी,
एक दिन बौज्यू ल ईजा के आपण मैतण जाण कि इजाजत दी दे,
तब हम द्वी भाई दगाड़ मावकोट घूमने गयां,
एक साल रूढ़ी दिन छी और, तब हम मिडिल में पढ़छिया, सनू(वर्ष)याद नी औने,
हमर सालाना इम्तिहान खतम है गे छी, गरमियों की छुट्टी है रैन्छी,
तक हम रोडवेज की बस में बैठीबेर रानीखगत तक गया,
वां बटी हम द्वाराहाट तानी पैदल सड़क बटी पैदल बाट लगियां,
उन तिकान रानीखेत द्वारिहाट मोटर रोड नी बनी छी,
सड़क बणना लिजी आग जाग कटान हैरौ छी,
तब हम रानीखेत बाजार बटी सैणकुण होते हुए
गाास पुल करि वेर नौगाँव तक गया,
रूढ़ी दिन हुना कारण चटक घाम लागी रौछी,
यो वास्ता बाट में कती कती स्वोव में ऐराम करते रबा,
फिर कफड़ा तल्ल नौगाँव पगडंडी पार अपन मावकोट पूजि गया,
वां हमर मावकोटियों कि सुन्दर पाखली छी,
हमर माम मनोरथ ज्यू बहुत पैली फौज में छी,
जो विश्वयुद्ध में लड़ाई में शहीद है गौछी,
उनरी घरवाली हमरी मामी हमुके देखि वेर बहुत खुश है गौछी,
उनरा च्यल ज्वालादत्त रानीखेत डाकखाण में पोस्टमेन छी,
कदिने कदिने उ घर आई करछी,
तब उनकर दगड़ हमारी भेंट हुन्छी,
हमर मावकोट क गौ मैं चारों तरफ ग्युं क खेत छी,
उन दिनों ग्युं की पुसल पाकी वेर फसल कटाई-मड़ाई काम चलरौछी,
सब काश्तकार आपण फसल समेटण में व्यस्त छी,
गौ क किनार में एक एक जाग पाणी नौल छी,
वां हम रत्ते-रत्ते में घर बटी नाण है जाई करछिया,
वाई वे फौल में पाणी भरी वेर लछियाँ,
एक दिन हम द्वी भाई घुमना लिजी पैदल द्वाराहाट घर गया
गाड़ी सड़क नि हुणा कारण हम द्वीनो पैदल घर बटी बट लागया,
नौगाँव, कफड़ा, तल्ली मिरई, मल्ली मिरई होते हुए द्वाराहाट पूजीं गयां,
वा जाग जाग मन्दिर बणि छी, मन्दिर क दर्शन करि वेर,
बाजार घुमने गयां, एक दूकान में दई-जलेबी खे,
तब द्वाराहाट में बहुत कम आबादी छी,
फिर वा बाटी वापिस बाट लागि वेर पैदल नौगाँव तक आपण मावकोट पूजि गयीं।
फिर कुछ दिन वां रुणका बाद बाद हम रानीखेत पैदल आया।
बाट में सैण कुण गौ छी,
जो हमरी ठुल इजा (इजा की दीदी) क सौरास छी,
एक रात वां रुकी वेर दुसर दिन रानीखेत आया,
फिर रानीखेत बटी रोडवेज की बस में बैठी वेर आपण घर ज्योलीकोट पूजीं गया।
यसी रे हमर मालकोट की यात्रा
यो यात्रा करि करीब 70 या 72 साल है गई,
अब ना मेरी ईजा छू
न बाबू छन, और ना ठुल भाई तारादत्त छन, और न मावकोट छन,
सब दिवंगत है गईं, बहुत पुराणी बात है यां,
अजि ले मणि मणि याद छू।।

-नन्दा बल्लभ पाण्डे
ज्योलीकोट, नैनीताल

ज्योतिष की बातें - 157

इस सप्ताह चन्द्रमा के अतिरिक्त अन्य किसी भी ग्रह का गोचर परिवर्तन नहीं हो रहा है। इस सप्ताह चन्द्रमा क्रमशः कुम्भ, मीन, मेष व वृषभ राशि में गोचर करेगा। चन्द्रमा के गोचर का जातक के मन पर अधिक प्रभाव पड़ता है।

22 दिसम्बर 2023 को सूर्य सायनमान से मकर राशि में प्रवेश करेगा, शिशिर ऋतु का प्रारम्भ हो जाएगा। अतः अगले दो माह त्रिला चूर्ण के साथ छठा भाग पीपल चूर्ण मिलाकर सेवन करना अधिक स्वास्थ्यप्रद रहेगा।

मोक्षदा एकादशी- मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष एकादशी उदय व्यापिनी तिथि में मोक्षदा एकादशी का व्रत होता है लेकिन यदि एकादशी अथवा द्वादशी तिथि का क्षय हो रहा हो तो दसवीं तिथि को ही व्रत रखा जाता है। अतः मोक्षदा एकादशी का व्रत शुक्रवार, 22 दिसम्बर 2023 को रखा जाएगा। मोक्षदा एकादशी को ही गीता जयन्ती मनाई जाती है। इस दिन भगवान कृष्ण ने अर्जुन को गीतोपदेश प्रदान किया था अतः हम सबको इस दिन गीतापाठ अवश्य करना चाहिए।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 48

चुनाव परिणाम

भारतीय संविधान के अनुसार वर्तमान चुनाव प्रणाली में बहुमत के आधार पर प्रत्याशी को विजयी घोषित किया जाता है। किसी नेता का चुनाव में जीतना यह सिद्ध नहीं करता कि वह व्यक्ति श्रेष्ठ है बल्कि उसका श्रेष्ठ होना या न होना इस बात पर निर्भर करता है कि उसको वोट देने वाले किस प्रकार के लोग हैं।

क्या वे अच्छे लोग हैं, पढ़े-लिखे लोग हैं, समाज का हित चाहने वाले लोग हैं? अथवा क्या वे स्वार्थी और लालची हैं, क्या वे जातिवादी और सम्प्रदायवादी हैं, क्या वे गुण्डा अर्थात् हिंसक प्रवृत्ति के लोग हैं? जिस प्रकार के लोगों ने नेता को वोट दिया होता है, नेता उसी प्रकार का होता है। चुनाव में जीतना श्रेष्ठता अथवा देशभक्ति का पैमाना नहीं होता है।

चुनाव में लगभग 70 प्रतिशत मतदान होता है और उसमें भी सामान्य रूप से 30 प्रतिशत वोट पाने वाला प्रत्याशी विजयी हो जाता है, अर्थात् कुल मतदाताओं का लगभग 20-21 प्रतिशत वोट जिसको मिल जाता है वह चुनाव में विजयी हो जाता है। इसका अर्थ यह हुआ कि जिस नेता को कुल वोटर्स का 25 प्रतिशत वोट मिला है उसको 75 प्रतिशत जनता ने वोट नहीं दिया है फिर भी नीतियाँ वही बनाएगा। ठीक यही बात जो किसी नेता विशेष के लिए लागू होती है, वही बात राजनीतिक दल विशेष के लिये राज्य स्तर पर और केन्द्रीय स्तर पर भी लागू होती है।

कुल मिलाकर प्रजातन्त्र में यह चुनावप्रणाली एक भीड़ तन्त्र बनकर रह गया है। अतः देश में कोई स्थायी केन्द्रीय सत्ता अवश्य होना चाहिए जो इन चुने हुए नेताओं के द्वारा किए जाने वाले देश विघातक व समाज में विद्वेष पैदा करने वाले ऊटपटांग निर्णयों को लागू करने से रोक सके ।

-सरल

पूर्णागिरी मेले की तैयारी के निर्देश

चम्पावत। आगामी पूर्णागिरी मेले की तैयारी के लिये जिला पंचायत और प्रशासन द्वारा बैठक आयोजित कर तैयारियों पर चर्चा की गई। आगमी 26 मार्च से आरम्भ होने वाले पूर्णागिरी मेले की अवधि 82 दिन होगी। जिला पंचायत अध्यक्ष ज्योति राय की अध्यक्षता में सम्पन्न बैठक में मेले को भव्य रूप देने का निर्णय लिया गया। बैठक में डीएम नवनीत पाण्डे ने एसडीएम टनकपुर और अपर मुख्य अधिकारी जिला पंचायत से कहा कि उनकी पहली प्राथमिकता मेले में यात्रियों की सुरक्षा और उन्हें बेहतर सुविधा प्रदान करने की होनी चाहिये। ककराली गेट से पूर्णागिरी धाम तक मार्ग सुव्यवस्थित हो, लाइटिंग, पेयजल, शौचालय, स्नानागार, संचार, आवास, स्वास्थ्य आदि की पूर्ण व्यवस्था के लिये सम्बन्धित विभाग अभी से तैयारी करें। एसडीएम टनकपुर को मेला मजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया है।

कैम्पस में तैनाती हो

पिथौरागढ़। कैम्पस का दर्जा मिलने के बाद महाविद्यालय की समस्याएं दूर न होने से एनएसयूआई ने आक्रोश प्रकट करते हुए ज्ञापन सौंपा है। कहा कि एसएसजे विश्वविद्यालय का कैम्पस बनने के बाद से अभी तक प्राध्यापकों की तैनाती नहीं होने से गतिविधियां प्रभावित हो हैं। प्राध्यापकों की तैनाती की जाए।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

आरएस टोलिया की सातवीं पुण्य तिथि पर विशेष

बहुप्रतिभा का ऐसा नौकरशाह पैदा नहीं हुआ

जगत सिंह मर्तोलिया

जोहार भूमि के ग्राम टोला निवासी डॉक्टर रघुनंदन सिंह टोलिया हिमालय राज्यों के विकास के लिए समर्पित एक नाम है। उत्तराखण्ड मूल के प्रथम मुख्य सचिव तथा मुख्य सूचना आयुक्त के पद पर रहे उत्तराखण्ड ही नहीं भारत के प्रमुख नौकरशाहों में एक डा. टोलिया का जन्म 15 नवम्बर 1947 को दीवान सिंह टोलिया के परिवार में हुआ। उन्होंने एमएससी गणित, एमए इतिहास करने के बाद पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। रूरल विकास का इतना जूनून उनको था कि उन्होंने डिप्लोमा इन रूरल सोशियल डेवलपमेंट (रीडिंग यूके) की उपाधि को भी प्राप्त किया। भारत के भारतीय प्रशासनिक सेवा में एक ऐसे नाम है, जिन्हें आज भी देश याद करता है। डॉ. टोलिया बिना आरक्षण के भारतीय प्रशासनिक सेवा की परीक्षा उत्तीर्ण कर 1971 के बैच के आईएएस अधिकारी बने।

टोलिया जी ने उत्तर प्रदेश में रहते हुए पर्वतीय विकास विभाग का पृथक रूप से गठन करने में मुख्य भूमिका निभाई। इस विभाग के सचिव रहते हु हमेशा उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्र के विकास के लिए कार्य किया। उत्तराखण्ड राज्य बनने के बाद राज्य मूल्य के प्रथम मुख्य सचिव बनने के बाद डॉ. टोलिया हिमालय क्षेत्र के विकास के लिए एक लम्बी लकीर खींचने चाहते थे, प्रदेश के राजनेताओं के सहमत नहीं होने के कारण आज भी उनका सपना सपना ही बना हुआ है। 16 घण्टा काम करने वाले टोलिया जी को हिमालयवासियों का अभिभावक भी कहा जाता है। मुख्य सचिव के पद पर रहते हुए उन्होंने कभी भी अपने वाहन पर लालबत्ती नहीं लगाई। पुलिस स्काउट व्यवस्था भी स्वीकार नहीं किया। एक साधारण साधक के रूप में मुख्य सचिव के पद पर कार्य करते रहे। उनके आगे पीछे कभी काफिला भी नहीं रहता था। राज्य की नौकरशाही के उच्च पद पर रहते हुए सादगी के साथ उन्होंने अपना कार्यकाल पूरा किया।

डॉ0टोलिया चाहते थे कि हिमालय क्षेत्र के लिए विकास की अलग नीति बननी चाहिए।

विकास की तकनीकी पर भी वे हिमालय के अनुरूप नीति चाहते थे। महिला

स्वयं सहायता समूह के निर्माण में उनके योगदान को कोई भूला नहीं सकता है। उत्तर प्रदेश में रहते हुए महिला डेरी उन्हीं के दिमाग की उपज थी। आज उत्तराखण्ड में आंचल के नाम से जो दुग्ध उत्पाद हमें दिखाई देते है। उसकी रचना भी उन्होंने ही की थी। रामबांस प्रोजेक्ट उनकी ही देन है। उत्तराखण्ड में इस बात को विशेषज्ञ कहते थे कि चीड के जंगल में कोई दूसरा पौधा पैदा नहीं हो सकता है। उन्होंने उत्तराखण्ड बनने के बाद चाय विकास बोर्ड का गठन किया। आज उत्तराखण्ड में चीड के जंगलों के नीचे चाय के लह लहराते बागान टोलिया जी के उत्तराखंड के पर्वतीय प्रेम को दर्शाता है।

उत्तराखण्ड में वन विभाग को कार्यदायी संस्था का स्वरूप भी डा. टोलिया के द्वारा दिया गया। वन पंचायत के लिए नया वन पंचायत एक्ट लाकर टोलिया ने इन पंचायत को नया जीवन दिया। राज्य निर्माण के समय ग्राम्य विकास आयुक्त तथा सचिव के रूप में कार्य करते हुए डाक्टर टोलिया ने उत्तराखण्ड के पर्यटन, ऊर्जा, जड़ी बूटी, पशुपालन, कृषि और उद्यान, हस्तशिल्प को राज्य की इकोनमी का आधार बनाने के लिए योजना बनाई। एक नौकरशाह होते हुए राजनेताओं के साथ तालमेल करते हुए अपनी योजनाओं को धरातल में उतारना बेहद कठिन था। फिर भी ने इन शब्दों को आमजन का शब्द तो बना ही दिया। उन्हें घूमने, पढ़ने और लिखने का शौक रहा है। एक व्यस्त नौकरशाह होने के बाद भी उनका अध्ययन इस स्तर का था, कि उन्हें आज भी एक चलता फिरता स्कूल कहा जाता है।

उत्तराखंड के प्रथम मुख्य सूचना आयुक्त बनने के बाद उन्होंने सूचना के अधिकार को आमजन में लोकप्रिय बनाने के लिए कार्य किया। सेवानिवृत्ति के बाद इतने बड़े पदों में रहने के बाद भी डा. टोलिया ने मुनस्यारी स्थित ग्राम पंचायत सरमोली में अपना निवास बनाया। स्वध्याय और चिंतन के साथ राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय पत्र पत्रिकाओं में नियमित उनका लेखन जारी रहा। सेवानिवृत्ति के बाद हिमालय राज्यों को एकजुट करते हुए हिमालय नीति बनाने में जुटे हुए थे, कि उनका स्वास्थ्य खराब होने लगा। 6 दिसंबर 2016 को 69 वर्ष की आयु में उन्होंने इस दुनिया को अलविदा बोल दिया।

डा. टोलिया जब भी मुनस्यारी आते थे, अपनी बैठक में जिलाधिकारी को पूछते थे कि वह मिलम गाँव गए कि नहीं? एक बार जब उनसे ही यह सवाल पूछा गया कि आप हर जिलाधिकारी से यह सवाल क्यों पूछते है, तो डा. टोलिया का जवाब था, कि जब नौकरशाह कठिन जिन्दगी में रहने वाले लोगों के बीच जाएंगे, तभी वह समझ पाएंगे कि हिमालय क्षेत्र के लोग किन कठिनाइयों में रहते है। उनकाहमेशा यह मानना रहा कि प्रत्येक आईएएस तथा पीसीएस अधिकारियों को विकास की बारीकी समझने के लिए सबसे पहले खण्ड विकास अधिकारी के पद पर कम से कम 3 वर्ष कार्य करना चाहिए।

स्मृति समारोह में हिमालयी राज्यों के लिये अलग मॉडल बनाने की मांग उठी

मुनस्यारी। डॉ.आर.एस.टोलिया की सातवीं पुण्यतिथि पर महाविद्यालय में समारोह का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि जोहार क्लब के अध्यक्ष केदार सिंह मर्तोलिया, महाविद्यालय के प्रो. हितेश जोशी, संयोजक जगत सिंह मर्तोलिया द्वारा स्व.टोलिया की प्रतिमा के समक्ष पुष्प अर्पित किये गये। आयोजित प्रतियोगिता में विभिन्न विद्यालयों के प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतिभागी स्कूल राजकीय महाविद्यालय, राजकीय इण्टर कालेज, मुनस्यारी पब्लिक स्कूल, विवेकानन्द विद्या मन्दिर इण्टर कालेज, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय दरकोट, दुम्मर के विद्यार्थियों ने निबन्ध, चित्रकला व भाषण प्रतियोगिता में अपनी प्रतिभा के साथ ही पुरस्कार प्राप्त किये। जिला पंचायत सदस्य जगत मर्तोलिया ने विजेताओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम संचालन डॉ.रिफाकत अली ने किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के शिक्षक डॉ.राहुल पाण्डे ने स्वागत भाषण दिया जबकि शिक्षक डॉ.प्रमोद मण्डल, डॉ. राजेन्द्र सिंह, शैलेन्द्र भण्डारी, पी.के. निश्चल, भागीरथी राणा, गंगोत्री रायपा, मंजू रावत, जगदीश बृजवाल आदि मौजूद थे।

असमय चले गये डाक्टर यशवन्त

श्रद्धांजलि

युवा डाक्टर यशवन्त सिंह धर्मशक्तू पुत्र श्री दरपान सिंह धर्मशक्तू निवासी बलवन्त कालोनी हल्द्वानी का 4 दिसम्बर 23 की सुबह हृदयगति रुकने से निधन हो गया। करीब 50 वर्षीय यशवन्त निधन के पहले दिन ही हल्द्वानी अपने माता-पिता सहित मित्रों से मिले थे। युवा चिकित्सक के रूप में विभिन्न स्थानों में अपनी सेवा के बाद वर्तमान में वह बरेली में अपनी सेवाएं दे रहे थे। सुपर सिटी कलोनी डोहरा रोड बरेली में अपने परिवार के साथ निवास कर रहे डाक्टर यशवन्त सिंह तमाम सामाजिक कार्यों में सहयोगी रहते थे। अपने हँसमुंह और मिलनसार व्यवहार के कारण वह लोकप्रिय भी रहे हैं। डाक्टर यशवन्त भरापूरा परिवार छोड़ असमय हमारे बीच से चल दिये। पिघलता हिमालय परिवार अपने सहयोगी स्व.यशवन्त धर्मशक्तू को श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

नारायण पांगती अब यादों में

थल निवासी 84 वर्षीय नारायण सिंह पांगती का 4 दिसम्बर 23 को दिन में करीब 11.30 बजे निधन हो गया। पूरे इलाके में चक्की वाले पांगती के रूप में चर्चित नारायण सिंह जी अपने मृदु व्यवहार और सामाजिकता से सबके चहेते थे। अपनी दिनचर्या में चक्की पिसाई का कार्य के अलावा थल व इसके

अलावा जिन स्थानों पर भी गतिविधियां होती हों, उसकी खबर पांगती रखते और उनकी चाहत थी कि थल में बहुत कुछ हो। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व.जगत सिंह पांगती के पार्क व मूर्ति स्थापना समारोह मे जब पूजा कुटुम्ब थल में जुटा था, पांगती जी बहुत खुश थे और उनकी हमेशा रटन रही है कि पुरानी विरासतों को संवारा जाए। उनके बड़े कुटुम्ब में लोग बहुत दूर तक हैं जिन्हें बार-बार जुटना होगा। नारायण सिंह जी की सादगी ही थी कि सुविधाएं होते हुए भी उन्होंने अपनी कर्मभूमि पर व्यवहार बनाए रखा और पुत्र रमन व रुचि को शिक्षित कर योग्य बनाया। जीवन के उत्तरार्द्ध में भी वह अपने समाज व भले लोगों से जुड़े रहे। अपनी पत्नी श्रीमती जानकी देवी व पुत्र-पुत्री के साथ थल रह रहे पांगती जी पिछले कुछ दिनों से कमजोरी महसूस कर रहे थे। पिघलता हिमालय परिवार अपने साथी स्व. नारायण सिंह पांगती को श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

एचएन के कभी खुला मैदान दिखाई देने वाले परिसर में होने लगा था अतिक्रमण, बुल्डोर ने ली खबर

पि.हि. प्रतिनिधि

हल्द्वानी के पुराने स्कूल एच.एन. में बनी 42 दुकानों पर बुल्डोजर चलने की खूब चर्चा हो रही है लेकिन इसकी पड़ताल करें तो पता चलता है कि हरिदत्त नित्यानन्द स्कूल के लिये इन दो भाईयों ने जो दान किया, उसकी जमीन में शुरु से ही निगाह लगी थी। लेकिन कर्मठ व ईमानदार शिक्षक-कर्मचारियों की टीम ने स्कूल को संवारा। हाईस्कूल के बाद यह स्कूल इण्टर का दर्जा पाता तब तक इसकी खुशी बाउण्ड्री थी, धीरे-धीरे तार बाड़ मजबूत की गई। उस समय तक एक दुकान थी जिसमें चाय-छोले के लिये कुछ लोग जाते थे। स्कूल के बाहर बुजुर्गवार 'बचदा' की छोटे की दुकान खूब प्रसिद्ध थी। पांच पैसे बाद को दस पैसे की एक प्लेट छोले खाने के लिये बच्चों की भीड़ लग जाती थी। हल्द्वानी की मुख्य रामलीला में काल बनकर अभिनय करने वाले 'लल्ला' को पीढ़ियां जानती हैं, लल्ला बर्फ के गोले, चावल छोले इत्यादि का ठेला लगाते थे और सिन्धी कुल्फी वाला एक और ठेला लगा करता था। एचएन स्कूल की धाक देखते हुए आम से लेकर खास परिवारों तक के बच्चे समान रूप से पठन-पाठन के लिये आते थे। उस दौर के सभी शिक्षक आज तक समाज के आदर्श हैं। बाद को सुशीला तिवारी मेडिकल कालेज बनने की सुगबुगाहट के साथ ही एच.एन. की बाउण्ड्री में फड़-खोले खुलने लगे। कौन किसकी अनुमति से इन्हें बना रहा है, सब बेखबर थे और देखते-देखते दुकानों की लाइन लग गई। रामपुर रोड पर एच.एन. इण्टर कालेज को दी गई आरक्षित वन भूमि पर लीज शर्त का उल्लंघन कर चार दशक से चल रही 42 दुकानों को हटाने के लिये नोटिस दिया और तय समय पर इन्हें बुल्डोजर के द्वारा हटाना शुरु किया। प्रान्तीय उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मण्डल ने रोष जताते हुए कहा कि सरकार ने प्रभावित व्यापारियों के पुनर्वास का आश्वासन तक नहीं दिया। इनका पुनर्वास होना चाहिये।

परिक्रमा

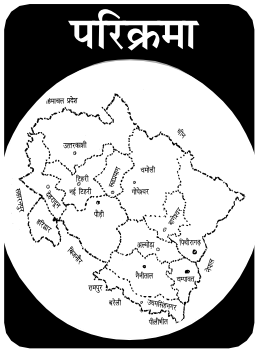

चारधाम की तर्ज पर बनेगी नैनीताल सड़क

काठगोदाम-नैनीताल 33 किमी की टू लेन सड़क चारधाम की तर्ज पर बनेगी। जिले की 600 करोड़ लागत की अब तक की सबसे बड़ी योजना का आगणन केन्द्र सरकार को भेजा गया है। इस कार्य के लिये 24 माह का समय रखा गया है। एसई एनएच अरुण पाण्डे के अनुसार सड़क की डीपीआर केन्द्र को भेज दी गई है। इसके पर्यटक सुविधा बढ़ेगी।

लोहाघाट में बनेगा बालिका स्पोर्ट्स कालेज

देहरादून। सीएम ने महाराणा प्रताप स्पोर्ट्स में आयोजित समारोह में 37 वें राष्ट्रीय खेलों के पदक विजेताओं को सम्मानित किया। खेल मंत्री रेखा आर्य ने बताया कि प्रदेश का पहला बालिका स्पोर्ट्स कालेज लोहाघाट में बनेगा, इसके लिये 500 नाली भूमि हस्तान्तरण के लिये अनुमोदन मिल चुका है।

हल्द्वानी में टर्टल ट्रांजिट सेंटर

प्रदेश का पहला कछुवा परगमन केन्द्र (टर्टल ट्रांजिट सेन्टर) हल्द्वानी के संजय वन में बनाया जायगा। इसमें विद्यार्थियों व शोधार्थियों को जलीय जीवों के प्रति जागरूक करने के मकसद से इंटरप्रिटेशन सेन्टर भी होगा। नमामि गंगे प्रोजेक्ट के अन्तर्गत तराई केन्द्रीय वन प्रभाग की टांडा रेंज के संजय वन में टर्टल ट्रांजिट सेन्टर बनाया जाना है।

मैग्नासाइट फैक्ट्री शुरु करने की मांग

पिथौरागढ़। कांग्रेस ने इन्वेस्टर्स समिट में पिथौरागढ़ की मैग्नासाइट फैक्ट्री के संचालन की मांग करते हुए प्रदर्शन किया। कहा कि यूपी के समय दो हजार परिवारों को रोजगार देने वाली इस फैक्ट्री को सरकार शुरु करवाए। जिससे पहाड़ में लोगों को घर पर रोजगार मिल सके। पूर्व दर्जा मंत्री महेन्द्र लुंठी के नेतृत्व में लोगों ने फैक्ट्री के बाहर प्रदर्शन किया। मजदूर नेता केदार सेठी भी मौजूद थे।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

आगे बढ़ता उत्तराखण्ड
सुरक्षा, समृद्धि और सुअवसरों की भूमि

DESTINATION UTTARAKHAND
GLOBAL INVESTORS SUMMIT 2023
8th - 9th December | Dehradun
Peace To Prosperity

उत्तराखण्ड ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2023

का

शुभारंभ

पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

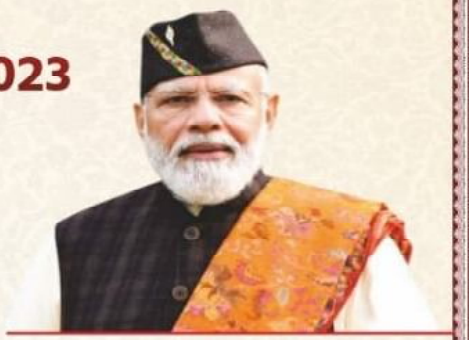

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री
के कर-कमलों द्वारा

गरिमामयी उपस्थिति
पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

दिनांक: 8 दिसम्बर, 2023
समय: प्रातः 9 बजे | स्थान: FRI, देहरादून

उत्तराखण्ड ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2023 के अंतर्गत ₹3 लाख करोड़ से अधिक के समझौता ज्ञापन (एमओयू) हस्ताक्षरित।

5,000 से अधिक व्यवसाय प्रतिनिधि एवं विभिन्न देशों के राजदूत करेंगे प्रतिभाग।

₹44,000 करोड़ से अधिक की परियोजनाओं का ग्राउंड ब्रेकिंग समारोह।

प्रदेश के सभी क्षेत्रों में 27 से अधिक निवेशक-अनुकूल नीतियां लागू। प्रतिस्पर्धी प्रोत्साहन, सब्सिडी और अनुकूल व्यावसायिक वातावरण के जरिए राज्य के निवेश में बढ़ावा।

पंजीकरण करने के लिए यूआरएल पर जाएं www.destinationuttarakhand.co.in/investorsummit/visitors/visitor-register

या क्यूआर कोड स्कैन करें /ukgis2023
टोल फ्री नं॰ 1800-309-7225

कार्यक्रम का सीधा प्रसारण DD News पर देखें।

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी | www.uttarainformation.gov.in | DIPR_UK | UttarakhandDIPR | UttarakhandDIPR

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

निर्भीक पत्रकारिता में अग्रणीय पिघलता हिमालय के बढ़ते कदमों के साथ-

J L A Foods

(Manufacturers of Quality Rice)

Vill- Banoosi, Post- Jhankat

Khatima

(U S Nagae)

RAMA AGRO INDUSTRIFS

(Manufacturers of Quality Rice)

Vill- Banoosi, Post- Jhankat

Khatima

(U S Nagae)

Hotel Bala Paradise

Tiksain, Munsiari

Ph. 05961222237, 9412951678

Hayat Paradise

Bus Station Munsiari

Ph. 09411556700, 9997733070

माँ नन्दा आयरन एण्ड बिल्डिंग मैटेरियल, भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी

(सीमेन्ट, सरिया, टाइल, पेण्ट, सेनेटरी, हार्डवेयर)

गोदाम- जोहार एसोसिएट्स

बच्चीनगर- 1, कमलुवागांजा, हल्द्वानी

मो.- 7409440813, 7500619761

Enjoy Beauty of Himalaya at

MARTOLIA LODGE

Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari

A Home Away From Home & Home Stay

Phone: (05961) 222287

घर से बाहर घर का सा

होटल लक्ष्य इन मदकोट

सम्पर्क

735285555

पूर्ण कालिक संगीत प्रशिक्षण केन्द्र

हिमालय संगीत शोध समिति

जे.के.पुरम्, सेक्टर डी

छोटी मुखानी

हल्द्वानी

सम्पर्क- 9411563413

MARTOLIA FURNITURE

A unit of Martolia Enterprises

Pilikothi, Haldwani

Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

धमोत होम स्टे

धरमघर/चकोड़ी

(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)

मो. 9760007148

www.mountainheights.in

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर

नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स

हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

फोन सम्पर्क- 05961-222236

8958525979, 9411134775

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/फैक्सः (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014,

editorpighaltahimalay@gmail.com

Website- www.pighaltahimalay.com

पत्र व्यवहार के लिये पते- जे0के0पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)